Impact Factor-7.675 (SJIF)
ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

February -2021

ISSUE No- (CCLXXI) 271

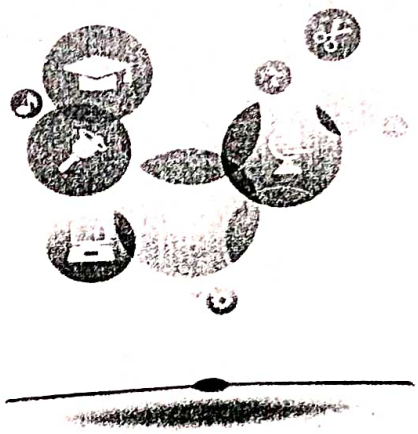

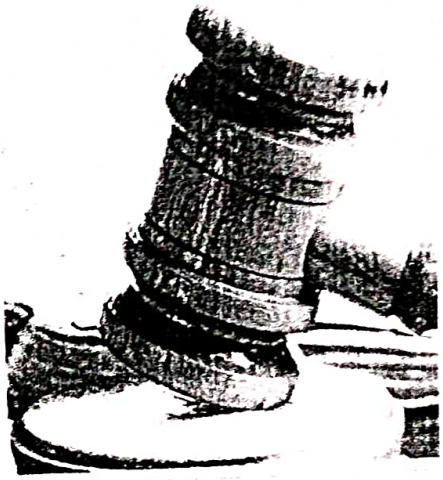

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr.Dinesh W.Nichit
Principal
Sant Gadge Maharaj
Art's Comm,Sci Collage,
Walgaon.Dist. Amravati.

Executive Editor:
Dr.Sanjay J. Ko[illegible]
Head, Deptt. of Economics
G.S.Tompe Arts Comm,Sci Col
Chandur Bazar Dist. Amrava

B.Aadhar

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publication

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO, 271(CCLXXI)
ISSN : 2278-9308
Fabruary, 2021

कोरकु आदिवासी शिशु संस्कार विधीपर तंत्रज्ञान का प्रभाव

सहा. प्रा. आनंद गो. मनवर
(समाजशास्त्र विभाग) युवाशक्ती कला व विज्ञान महा. अमरावती

प्रस्तावना :

किसी भी व्यक्तीका जिवनचक्र जन्मसे प्रारंभ होकर मृत्यूपर समाप्त हो जाता है। कोरकु समाज आज भी आर्थिकस्थिती से ग्रस्त, अस्तीर, सामाजीक संघटनसे मुक्त परिवर्तनरत एक समाज है। कोरकु समाज अतित और भविष्यके बिच संक्रमनकालीन अवस्थासे गुजररहा है। कोरकु उनके अतितसे लेकर अपतक निरंतर दबाओ, संघर्षो और परिवर्तनोके स्वरुप आजतक अपने जिवनको विकसीत नही कर पाऐ। कोरकु जनजाती मे व्यक्ती के जीवनकी इन्ही घटनाओपर आधारीत जन्म संस्कार, विवाह संस्कार और मृत्यू ये तिन संस्कार जीवन के चक्र मे किये जाते है।

कोरकु समाज मे पितृसत्तात्मक कुटुंब पध्दती है और टोटम पर आधारित है इसमे दो वर्ग पाये जाते है, राजकोट कोरकु एंव पठारिया राज कोरकु, कोरकु स्वंय को हिंदु मानते है। यह लोग महादेव एवं चंद्रमाकी पुजा करते है। डोंगरदेव, भटुआ देव, एक गांव के देव इनके प्रमुख देवता है। दशरा दिपावली होली जैसा त्यौहार बडी उत्साह के साथ मनाते है। भुमिया और पडीया कोरकुओ के सन्मानीत व्यक्ती है। अपने दैनंदीन जिवन मे अनेक प्रकारकी संस्कार विधीया करते है।

कोरकु का अर्थ :

मुलत: कोरकु शब्द दो शब्दो से बना हुआ है, जैसे की कोरो + कु = कोरकु कोरो शब्द का कोरकु बोली मे शाब्दीक अर्थ मनुष्य है। जबकी कु बहुवचन बोधक है। इस प्रकार कोरकु का अर्थ मनुष्य का समुह है।

बोआस के अनुसार :

'' जनजाती याने ऐसा समुह जो आर्थिक रुपसे स्वतंत्र समुह है। जो एक भाषा बोलता है और बाहरी दुनिया से खुद को बचाने के लिऐ, संघटीत रहना है।''

कोरकु जनजातीमे प्रचलीत शिशु संस्कार विधी निम्ननुसार है –

१. नामकरण संस्कार

छठी पुजन के आयोजन के अवसरपर नामकरण संस्कार ग्रामीण एवं अन्य अतिथीयोके समक्ष परिवारके वयोवृध्द व्यक्ती अथवा प्रसवं संपादीत करणेवाली दाई बालक का नामकरण कर देती है। बालक का नाम उसके परिलक्षीत किसी विशेषता, शारिरीक गुण, जिस दिन जन्मलिया उसदिन के नाम पर पडीहार के कथा नुसार जिस पुर्वज की आत्माने शिशुके रुपमे पुर्नजन्म धारण किया है। उस पुर्वज के नाम पर या पारंपारिक प्रचलीत नामो के आधारपर रख दिया जाता है। यह नाम छठी पुजनवाले दिन पंडीतको बुलाकर नामकरण करवाते है।

२. अन्न प्राशन व मुडन संस्कार

यह संस्कार संपादन संस्कृतीकरण की प्रक्रीयाकाही अंग है। क्योकी इन्हे न केवल कृषक प्रतिमानपर बलकी ब्राम्हण पंडीतके माध्यम से किया जाता है।

उससे जाहा एक और अपने समाज मे उनकी प्रतिष्ठा बढती है वही उनके व कृषको के बिच दुरी कम करणे मे भी सहाय्यता मिलती है। अन्न प्राशन संस्कार व मुंडन संस्कार कोरकुओ मे अधिक लोकप्रीय नही हो पा रहे है। इसके उत्तरदायी कारण मुख्यता इनका व्यय

साध्य होना है। सामान्य आर्थिक स्थिती वाले कोरकु के लिये ये संभव नही होता है की, वह इन संस्कारोपर होनेवाले व्यय के भार वहन कर सके। उपरोक्त दोनो संस्कारोका कोरकु समाज मे प्रचलन परंपरागत नही है इसलीये यह सबकेलिये अनिवार्य नही है। कोरकुओमे इनके प्रचलन एवं लोकप्रीय होनेका मुख्य कारण ये है की इससे न केवल संस्कृतीकरण मे सहाय्यता मिलती है दुसरी और कृषको और उनके बिच की दुरी को कम करने मे सहाय्यता मिलती है।

३. कर्णवेद संस्कार

कर्णवेद संस्कार मुलरुपसे सिमीत कार्य विधीयो के साथ अतित से ही मनाया जाता है। कोरकु अतित मे आभुषनो के अत्यंत शौकीन थे किंतु अब विपरीत आर्थिक परिस्थिती के कारण आभुषणप्रियता अधिक नही रही है। बुजुर्ग कोरकु पुरुषो और महिलाओ को अभिभी कान मे सोने की छोटी मुग्रीया पहने हुये देखा जा सकता है। सोने के स्थान पर अब तांबे और स्टेनलेस स्टील कि बालीया झुमके आदि पहने जाते है। इन दृष्टी से बाल्यकाल मे भी लडके लडकियों के कान छेदनेका प्रचलन रहा है। अतित मे यह कार्य परिवार की किसी बुजुर्ग महिला व्दार किया जाता था किंतु अब सांप्ताहीक हाट मे इस व्यवसाय को करने वालो से किया जाता है। इस आयोजन के लिये चैत्र वेशाख के माह को उपयुक्त माना जाता है। ये कार्य के लिये निकट के रिश्तेदारो को भी बुलाया जाता है। लडकीयो की नाक भी छीदवा ली जाती है यह आयोजन प्रत्येक कोरकु अनिवार्य समझता है। क्योकी इससे न केवल आभुषन पहननेमे सहाय्यता मिलती बलकी अन्यो की कुदृष्टीसे एवं दृष्ट लोगो के अनिष्टकारी प्रभाव से सुरक्षा होती है।

यह शिशु संस्कार कोरकु आदिवासीयो मे की जाती है। यह करने से शिशु को वाहरी आपदाओ से उसका सरंक्षण होगा यह कोरकु आदिवासीयो की धारणा है।

अनुसंधान का उद्देश :

१. कोरकु आदिवासी मे संस्कार का महत्व क्या है जानने के लिये।
२. शिशु संवंधी क्या अनुष्ठान किये जाते है ये जान लेना।
३. आज के युग मे इसमे क्या परिवर्तन हुआ ये दखना।

अनुसंधान क्षेत्र :

महाराष्ट्र के अमरावती जिले मे एक बहुत बडा आदिवासी क्षेत्र है इसमे कोरकु जनजाती मुळ संख्या मे पायी जाती है। यहा के आदिवासी अपने विभीन्न समस्योओ से पिडीत है। जिसमे स्वास्थ, शिक्षा, आदि जैसी कई समस्याये है लेकिन उनके पास जिवन जिने की एक अलग संस्कृती है जिसमे सन, उत्सव, धार्मिक विधी, संस्कार की विधी, अन्य समाज से अलग है।

अनुसंधान की पध्दती :

प्रस्तुत अनुसंधान मे वर्णनात्मक पध्दती का अवलंब किया है।

नमुणा निवड :

आज किसी भी संशोधन कर्ता के लिये वहुसंख्या मे रहनेवाले समग्र का अध्ययन करना मुश्कील काम है। इसलीये महाविदयालय मे पढनेवाले ३० छात्राओसे की के अनुसार उत्तरदाताओका चयन किया गया।

तथ्य संकलन :

प्रस्तुत अध्ययन मे तथ्य के संग्रह के लिये प्रश्नावली और साक्षात्कार का उपयोग किया गया और दुय्यम स्त्रोतो के माध्यमसे तथ्यो का संग्रह किया गया।

नये तंत्रज्ञान का प्रभाव :

आज के युग मे तंत्रज्ञान का प्रभाव सभी इलाकोमे देखने को मिलता है। चाहे वह ग्रामीण हो या आदिवासी। शहरीकरण और औदयोगीकरण के माध्यम से आदिवासी और ग्रामीण की

दुरीया कम हो रही है। इस का प्रभाव आदिवासीके जीवनचकपर साफ दिखनेको मिलता है। चाहे वो सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतीक, खानपान, वेशभुषा, संस्कारविधी इनसभपर देखनेको मिलता है।

कोरकु आदिवासीमे किये जाणे वाले शिशु संस्कार मे भी दुरसंचार (टि.व्ही) फिल्म का प्रभाव कोरकु आदिवासीके वेशभुषा, केशभुषा और धार्मीक विधीपर दिखता है। कोरकु आदिवासी मे नामकरण के संस्कार के आयोजन के अवसर पर वयोवृध्द या दाई बालक का नाम रखते समय दिन, शारिरीक गुण, या पुर्वज के नाम पर रखा जाता था। परंतु आज नामकरण की विधी और नाम फिल्म और टि.व्ही मे आनेवाले नामोपर दिखने को मिलते है।

अन्य प्राशन मुंडन संस्कार विधी मे भी बदलाव आया है। पहले ब्राम्हण, पंडीतके माध्यम से किये जाते थे। आज उसका प्रभाव कम हो रहा है। कर्णवेध संस्कार मे भी बदलाव देखनेको मिलते है। कर्णवेध संस्कार परिवार के किसी महिलासे किया जातो था आज बाजारहाट, या सोनार के दुकानमे किया जाता है।

कोरकु आदिवासी समाज मे उनके जिवनचक मे बदलाव देखनेको मिल रहे है। लेकीन आज भी आदिवासी जिवनमे अनेक समस्या और पारंपारीक कु प्रथाओका असर देखनेको मिलता है। आज सब तरफ औषधालय, डॉक्टर जैसी सुविधाएं होते हुये भी बालक को भुमका, या घरेलु इलाज किया जाता है। इसमे बालक के पेट या पिठपर गरम सलाईसे जलाया जाता है। आज आधुनिक युग मे भी ऐसी घटनाएँ अखबारोमे पढने को मिलती है। इसका अर्थ आज भी अज्ञान और प्रथा परंपराओ का प्रभाव आदिवासी समुह पर देखने को मिलता है।

शहरीकरण और औदयोगीकरण के चलते आदिवासी समाज जीवन मे बदलाव सकारात्मक दृष्टीकोनसे करणे की जरुरत है। जिससे उनके जिवन मे सुधार हो सके। इसमे स्थानिय शिक्षीत लोगो को पुढाकार लेने की जरुरत है।

निष्कर्ष :

उपरोक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष मिलता है की, आदिवासी समाज मे संस्कार की विधीया आज भी की जाती है। पहले जिस तरह संस्कार विधी की जाती थी इसमे शहरीकरण व शिक्षा की वजह से इसमे परिवर्तन देखने को मिलता है।

आज कोरकु आदिवासी लोग कर्ज निकालकर यह संस्कार करते है।

संस्कार की विधी को धर्म से जोडकर यह विधी करना आवश्यक माना जाता है। यह करने से शिशु पर आने वाली आपदा से उनका सरंक्षण होगा यह उनकी धारणा है।

संदर्भ ग्रंथ :

१. भंडारकर पु.ल – सामाजिक संशोधन पध्दती, नागपुर महाराष्ट्र विद्यापीठ ग्रंथ निर्माती मंडळ, १९९५
२. कुलकर्णी पि.के – सामाजिक विचार प्रवाह, नागपुर श्री. मंगेश प्रकाशन,१९९१
३. मदन जि.आर.– भारतीय सामाजिक समस्याह, दिल्ली विवेक प्रकाशन, १९८१
४. डॉ. पाटीले अशोक द. – कोरकु जनजिवन, नागपुर विद्याभारती प्रकाशन
५. लोटे रा.ज./डॉ. चौहान ए.डी. – भारतीय सामाजिक सरचना आणि सामाजिक समस्या, नागपुर पिंपळापुरे ॲड कं. पब्लिशर्स, २००८
६. डॉ. बोबडे/लोटे – सामाजिक मावशास्त्र, नागपुर पिंपळापुरे ॲड कं. पब्लिशर्स ८५, कॅनॉल रोड,१९९०
७. लोटे रा.ज./चौहान ए.डी – सामाजिक मावशास्त्र, नागपुर पिंपळापुरे ॲड कं. पब्लिशर्स, २००८.